International Journal of Applied Research 2020; 6(7): 478-479

**ISSN Print:** 2394-7500
**ISSN Online:** 2394-5869
**Impact Factor:** 5.2
IJAR 2020; 6(7): 478-479
www.allresearchjournal.com
Received: 10-05-2020
Accepted: 12-06-2020

**मंजु के.एम.**
शोधार्थी दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, एरणाकुलम, भारत

**Corresponding Author:**
**मंजु के.एम.**
शोधार्थी दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, एरणाकुलम, भारत

# मनोहर श्याम जोशी की उपन्यास 'हमज़ाद' में नारी विमर्श

## मंजु के.एम.

भारत के अर्द्धनारीश्वर परिकल्पना के अनुसार सृष्टिकर्ता ने अपने शरीर के दो हिस्सों को स्त्री और पुरुष की संज्ञा दी। स्त्री और पुरुष समान और परस्पर पूरक है। नर-नारी संबंधों के मूलभूत तत्व के तहत स्त्री के बिना पुरुष के या पुरुष के बिना स्त्री का अस्तित्व अधूरा रहेगा। नर-नारी के पूर्ण सहयोग एवं समन्वय से ही सृष्टि कार्य सुचारु रूप संपन्न होता है। इस संदर्भ में आशारानी ब्होरा का मत सार्थक है, "पुरुष को प्रकृति ने बल अधिक दिया है तो स्त्री को दृढता और सौंदर्य अधिक। पुरुष संसार में जोश और साहस करने के लिए बना है तो स्त्री धैर्य और चरित्र सिखाने के लिए, करुणा और प्रेम बरसाने के लिए। दोनों की भिन्न प्रकृति से ही परस्पर पूरकता और जीवन की पूर्णता संभव है।"[१]

प्राचीन भारत की लोक – कल्याणकारी, भाईचारे और समन्वय की भीवना ने विश्व को शांति, समता और अहिंसा का मार्ग दिखाया। 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना जनमानस के लिए प्रेरणा की आदर्श रही है। इसका प्रमुख कारण यह है कि सामाजिक प्राणी के रूप में मनुष्य ही समाज में संगठन एवं व्यवस्था स्थापित करते हुए इसे प्रगति एवं प्रगतिशीलता की दिशा में ले जाने हेतु सदैव प्रयत्नशील रहा है।

समाज कल्याण – परिवार की सुव्यवस्था से ही संपन्न होता है। माता-पिता, बेटे-बेटियाँ, भाई-बहन, पोते-पोतियाँ आदि से भर पूर-भारतीय संस्कृति में, ऐसा ही परिवार था। लेकिन आज बहुत कुछ बदल गया है। आज अणु परिवार की सुविधाओं में लोग फँस गये हैं। भिर भी हम यकीन के साथ कह सकते है कि परिवार का समारंभ नर-नारी के प्रेमपूर्ण समन्वय से ही होगा।

आधुनिक हिन्दी साहित्य के श्रेष्ठ गद्यकार, उपन्यासकार, व्यंग्यकार, पत्रकार, दूरदर्शन धारावाहिक लेखक, जनवादी विचारक, फिल्म पर कथा लेखक, उच्च कोटि के संपादक, कुशल प्रवक्ता तथा स्तंभ लेखक - मनोहर श्याम जोशी का बहुत चर्चित एवं विमर्श पर जुडी उपन्यास है 'हमज़ाद'। इस उपन्यास में हैवानियत अपनी चरम सीमा पर है, स्त्री-पुरुष शुद्ध मादा-नर के रूप में है, धोखाधड़ी, हेराफेरी, लूटपाट, अपहरण, बलात्कार, अनियंत्रित सेक्स का अपने पूरे नंगोपन में चित्रण हुआ है। 'हमज़ाद' का अर्थ है – 'साथ ही पैदा हुआ'। मनोहर श्याम जोशी ने डॉ. मीना खरात को दिये साक्षात्कार में फरमाया है कि हमज़ाद पूंजीवाद में निहित अमानवीयता और मानववाद में निहित शैतान के सहयोग से पैदा हुई उपभोक्तावादी नरक से भयभीत मनःस्थिति में लिखी हुई रचना है।

उपन्यास का मुख्य कथापात्र है - टी.के, मतलब टोपनदास खिल्लूराम, पिता प्राइमरी स्कूल में मास्टर थे। आधा दर्जन बेटियों के बाद बेटा टोपन पैदा हुआ। जब बारह साल का था, बाप गुज़र गया। टोपन को तीन कमज़ोरियाँ थी - शराब खोरी, जुआ और सेक्स। टोपन ने तीनों बहनों की शादी बूढों से ही की। उनके विधवा होते ही उनकी ज़मीन-जायदाय पर कब्जा कर लिया। यहाँ से शुरु होता है धोखेबास टोपन की कहानी।

विवाह एक सामाजिक संस्था एवं व्यवस्था है। प्राचीन काल से ही उसे महत्वपूर्ण स्थान दिया है। सामाजिक स्वास्थ्य, संवर्धन, भावुकता, संबंध, संतति रक्षा को मान्यता देनेवाली विधि है 'विवाह'। विवाह प्रत्येक समाज एवं संस्कृति तथा सभ्यता का एक आवश्यक अंग होता है।

विवाह से पूर्व टी.के अपने दोस्त तिलक की बहन कनक से बहन का दर्जा देते हुए ही उसे अनैतिक संबंध रखना चाहता है। कनक महेद्रप्रताप के साथ भाग लेना चाहती है, लेकिन टी.के उसको बलात्कार करता है। विवाह के पश्चात टी.के का असली चेहरा सामने आता है, वह कनक को सिर्फ इस्तेमाल करना चाहता है। उसके लिए रिश्तों की कोई अहमीयत नहीं है। वह नर और मादा दो ही रिश्ते मानता है। कनक जब माँ बनती है तब पूर्वप्रेमी का संबंध जोड़कर उससे रिश्ता तोडना चाहता है। एक बच्ची को जन्म लेनेवारी कनक को इस दुनिया से हमेशा के लिए वह उठा लेता है। तिलक जानता था इसमें टोपन का ही हाथ है लेकिन उसके पैरों में दोस्ती की पांबदी थी।

नारी विवाह से पति से जुड़ी हुई होती है, परंतु कुछ परिस्थितियों में वह पति को छोड़ अन्य पुरुषों के प्रति आकृष्ट होती है। 'हमज़ाद' उपन्यास में मैना ऐसा एक कथापात्र है जिसने अपनी हताशा भरी ज़िंदगी से मुक्ति पाने के लिए क्षणिक आकर्षण की जाल में फँस गयी। टी.के अपनी पत्नी मैना को छोड़कर सरस्वती के साथ संबंध बनाता है। कई दिनों तक उसके साथ बाहर रहता है। मैना अपने पति के इस व्यवहार से दुःखी है। अपने सुख की तलाश में, पति द्वारा बुलाया गया तिलक, जो उसकी विवाहपूर्व प्रेमी थी, उसका ओर आकृष्ट होता है। "मैं और मैना फिर एक-दूसरे के नजदीक आने लगे और यह महसूस करने लगे कि टी.के ने हमारे दिल पर जो ज़ख्म किये हैं उन पर मरहम का काम अगर कोई चीज़ कर

सकती है तो वह मुहब्बत ही, जो कभी लाहौर की एक मुमटी में पनपी थी और जिसकी एक मुमताज निशानी हमारी गोद में खेल रही था।''[iii] नारी अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता को किसी भी कीमत पर बलिदान नहीं करना चाहती है। वैवाहिक जीवन में जब उसकी आकांक्षाएँ चूर-चूर हो जाती है तब वह विह्वल हो उठती है। अतः विवाहित पुरुषों द्वारा बाहर संबंध रखने से उदासीन परिस्थितियाँ पैदा होती है। अपने को रोक्कर भी विवाहित मैना उन परिस्थितियों में तिलक से नजदीकियाँ बढाती है। लेकिन असलियत यह है कि टी.के ने बेडरूम में खुफिया कैमरा रखता है और तिलक को भेज देता है। ताकि उसे मैना से रिश्ता तोड़ना है, उसके लिए अदालत में गवाही देने के लिए उस तज़वीरों की ज़रूरत है। इससे टी.के मैना को तलाक के लिए मजबूर कराती है। मैना तस्वीरों को देखकर उस लिफाफा तिलक के चेहरे पर मारती है और खुदखुशी करती है।

उपन्यास में यथार्थ के माध्यम से समाज में व्याप्त आसुरी वृत्तियों का पर्दाफाश किया गया है। पुरुषों द्वारा नारी का शोषण आज की प्रमुख समस्या है। उपभोक्ता संस्कृति में उसकी देह को आकर्षण बनाकर धन कमाने का साधन बनाया गया है। कभी स्क्रीन टेस्ट के बहाने तो कभी हिरोइन बनाने का लालच दिखाकर उसकी देह का व्यापार किया जा रहा है। इसमें न जाने कितनी स्त्रियाँ इस अमानवीय शोषण का शिकार होकर वेश्या के रूप में बंबई, बैंकाक, कलकत्ता में पहूँचायी जा रही है। उन्हें 'सेक्सवर्कर्स' की घिनौनी संज्ञा भी दी गयी है।

दूसरी पत्नी मैना की खुदखुशी के फौरन बाद ही टोपन सरस्वती से शादी की और उसे हनीमून के लिए विलायत ले गया। सरस्वती चाहती थी कि टी.के पहले उस फिल्म को पूरे करे जिसमें उसने सरस्वती को दूसरी हीरोइन का रोल दिया था। टी.के ने उससे कहा कि ''तुम्हारी जैसी नयी और सो भी बडी उम्र की लड़की को साइन किया है इसलिए डिस्ट्रिब्यूटर पैसा लगाने में हिचक रहा हूँ कि जब तुम मेरी ज़िंदगी की ही हीरोइन नहीं बन रही है तब तुम्हें अपने पैसे से अपनी फिल्म की हीरोइन क्यों बनाऊँ?''[iv]

आज की दुनिया में पुरुष के द्वारा स्त्री एक भौतिक खिलौना मात्र बनकर रह गई है। हर क्षेत्र में पुरुष स्त्री को अपने स्वार्थ के लिए हथियार बनाकर छलता रहता है। कभी आर्थिक विवशता के कारण तो कभी विवाह का प्रलोभन देकर कभी-कभी उस पर ब्लैकमेलिंग का तंत्र का प्रयोग भी किया जाता है। समाज में विवाह संस्था मजबूत होने का ढोंग रचा जाता है लेकिन वर्तमान में वह खोखली होती जा रही है। टी.के जैसे शैतान विवाह को लेकर गंभीर नहीं होते और सिर्फ नर-मादा रिश्ता ही मानता है। यहाँ विवाह का एक आदर्श रूप न रहकर वासनापूर्ती का चेहरा नज़र आता है। ऐसे विवाह एक तरह से नारी शोषण ही है।

बच्चे भगवान का रूप होते हैं, लड़कियाँ घर की लक्ष्मी है - भारतीय संस्कृति ने ऐसा हमें सिखाये हैं। बच्चों की परवरिश, उनकी खुशी के लिए माँ-बाप क्या-क्या नहीं करते है। लेकिन हमज़ाद में टी.के ने अपनी बेटी मीना को भी हमबिस्तर बनाना चाहता है। स्नेहबाई मीना को लेकर हरिद्वार चली गयी। वहाँ एक प्राईमरी स्कूल अध्यापक से उसकी शादी की। लेकिन टी.के उस अध्यापक का कातिल किया और मीना को भी हमबिस्तर बनाया जैसे उसकी माँ को किया था। इतना ही नहीं अपनी बेटी मीना को बेच लिया, जो भी देश-परदेश में अमीर अय्याशों के लिए भले घर की लड़कियों को सप्लाई करनेवाले लिली को ओर टी.के ने मीना से कहा कि ''तुझे हमबिस्तर बनाने में मैंने इसलिए परहेज नहीं किया कि तू तवायफों के खानदान से है। तेरी माँ, तेरी नानी, तेरी नानी की माँ, तेरी मौसी सब पेशा करती थीं। अब तू भी कर। अगर आइन्दः तेरी कभी कोई बेटी हुई तो वह भी पेशा करेगी।''[v]

आधुनिक जीवन में प्रेम जैसी पवित्र स्थिति असंभव होती जा रही है। अतः व्यक्ति अनैतिकता में उलझकर कुंठाओं और घुटनवरा विकृत सौंदर्यबोध का शिकार हो रहा है। उपन्यास में टी.के अपनी इसी रूप को चरितार्थ करता हुआ सर्वत्र मानवीय मूल्यों की चीख पुकार को अनदेखा करते हुए सत्ता और पैसों का घिनौना खेल खेलता है। उसके लिए पत्नी, बेटी, माँ, पौत्री यहाँ तक की पुरुष तिलक तखतराम भी वहशीपन की पूर्ती करनेवाले साधन है। टी.के ने इसी अमानवीतया के संबंध में कहा गया है कि ''भले ही मेरी सैक्स की भूख के लिए अब तुम्हारी जैसी पाँच सितारा खुशक हाजिर रहती है, मैं इस बात को भूला नहीं सकता कि तिलक वह टिक्कड़ है, जिसमें मैं ने पहले-पहले अपनी जिस्मानी भूख मिटायी थी। यह मेरा हमज़ाद है। मैं इसका साथ कभी नहीं छोड सकता।''[vi]

टी.के और मैना के बेटे जयकिशन के साथ हमेशा झगडा होता रहता है। जयकिशन जिस किसी लड़की को भी पसंद करते है, टी.के उसी को हाज़िल करता है। अंत में जयकिशन भी धोखेबासी से पैसे कमाते है और टी.के पर वार करते है। टी.के की बेटी सोनी – जिसे पौत्री भी कह सकते है - क्योंकि पुत्री की कोख में ही टी.के अपना बीज डाला - और जयकिशन मिलकर षड़यंत्र रचता है, उसमें टी.के और अपना दोस्त तिलक दोनों को हमेशा के लिए अलविदा करते है। अंतिम यात्रा में भी दोनों हमसफर हो जाते हैं।

**निष्कर्षः-**

उपन्यास में उपभोक्ता संस्कृति की ऐसा भयानक नासूर है जिसके लिए इच्छाओं की तृप्ति और भोग ही सर्वोपरी है। उसके नरभक्षी और विसगत व्यक्तित्व के माध्यम से लेखक मनुष्य की लालसाओं और प्रभुत्व स्थापित करने की अमूर्त इच्छाओं को चित्रित करते हैं।

आज पैसे का आकर्षण व्यक्ति को उस पाशविकता के दलदल में ले जा रहा है, इसके लिए शराब, सेक्स और जुआ आदि अनैतिक मार्गों को अपनाया जाता है। उनके लिए नैतिकता की कोई सीमा नहीं होती और चोरी, हत्या, छल, कपट, धोखेबाजी, ब्लैकमेलिंग आदि उनके साधन हैं। उपन्यास के ये तीन कथापात्र – 'तखतराम', 'जयदेव' और 'टी.के' इसके प्रतीक हैं।

हमारी प्राचीन मान्यता में 'काम' को जीत लेना पुरुषार्थ की निशानी मानी जाती थी और उसके विचलन की स्थिति में उसके दुष्परिणामस्वरूप नरक में तरह-तरह की यातनाओं का विधान किया जाता था। उसी प्रकार जोशीजी ने अंत में 'जैसी करनी वैसी भरनी' कहावत के अनुसार बुराई की समाप्ति के प्रति हमें आश्वस्त किया है। समाज की वास्तविक दशा तो हमज़ाद से भी अधिक भयानक है। आज नारी शिक्षा के बल पर अपनी अस्मिता बनाये रखने में सक्षम हुई है। भिर भी शोषण होते रहते हैं। भारतीय संविधान ने औरतों की वृद्धि एवं विकास के उपलक्ष्य में अनेक कानून एवं योजनाओं की गठन की है। केन्द्रीय सरकार ने सन १९७१ और १९७२ में दो महत्वपूर्ण कमीशन्स का गठन की है। अनुच्छेद ३९ के अनुरूप समान रूप से नर-नारी एवं पूरी नागरिकों को जीविका के पयप्ति साधन प्राप्ति का अधिकार तथा समकार्य के लिए समवेतन का अधिकार भी प्राप्त है। लेकिन क्या फायदा ... नारी की स्थिति वैसे ही वैसी है।

**संदर्भ**


i भारतीय नारी दशा और दिशा, आशारानी ब्होरा, पृ. १७२

ii हमज़ाद, मनोहर श्याम जोशी, पृ. १०४-१०५

iii हमज़ाद, मनोहर श्याम जोशी, पृ. १०७

iv हमज़ाद, मनोहर श्याम जोशी, पृ. ११९

v हमज़ाद, मनोहर श्याम जोशी, पृ. ११०